आतंकवाद एक वैश्विक चुनौती का समीक्षात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 05.05.2026
स्वीकृतः 10.06.2026

29

डॉ अमित कुमार गुप्ता
सहायक प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान विभाग)
वी0 श0 के0 चं0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
डाकपत्थर विकासनगर, देहरादून
ईमेलः *amitkgupta474@gmail.com*

सारांश

यह शोध पत्र समकालीन वैश्विक आतंकवाद की घटना का गंभीर परीक्षण करता है। यह 9/11 के बाद के विकास और उसके बाद छेड़े गए आतंक के विरुद्ध युद्ध की लगातार विफलताओं का पता लगाता है। यह अध्ययन सुरक्षा केंद्रित विश्लेषण से आगे बढ़कर उन राजनीतिक, आर्थिक और वैचारिक कारणों की जांच करता है जो उग्रवाद को बढ़ावा देते हैं। यह धर्म और शिक्षा के साधनिकरण का विश्लेषण करता है, विशेषकर अफगानिस्तान और पाकिस्तान में अनियमित मदरसों की भूमिका का। साथ ही यह अध्ययन कौटिल्य और मैकियावेली के ऐतिहासिक राज्य–शिल्प सिद्धांतों पर विचार करता है ताकि शक्ति की उन भू–राजनीतिक गतिशीलताओं को समझा जा सके जो वैश्विक अस्थिरता में योगदान करती हैं। अंत में शोध पत्र आतंकवाद के स्थायी समाधान हेतु एक समग्र रूपरेखा प्रस्तावित करता है, जिसमें वैचारिक विचित्रीकरण, शैक्षिक सुधार, आर्थिक विकास और गांधीवादी सिद्धांतों के अनुप्रयोग पर बल दिया गया है।

परिचय

आतंकवाद ने 21वीं सदी की अंतरराष्ट्रीय राजनीति के परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल कर रख दिया है। एक बार स्थानीय युक्ति मात्र रहा आतंकवाद अब एक गंभीर वैश्विक चुनौती के रूप में उभरा है जो सीमाओं, संस्कृतियों और धर्मों से परे है। 11 सितंबर 2001 की विनाशकारी घटनाएं एक जलविभाजक क्षण साबित हुईं, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को यह एहसास कराया कि स्पष्ट राज्य–आधारित खतरों का स्थान एक व्यापक और अलग–थलग भय की संस्कृति और बढ़ती वैश्विक असुरक्षा ने ले लिया है। इस घटना ने यूरो–अटलांटिक तंत्र में अभूतपूर्व सुरक्षीकरण की लहर की शुरुआत और वैश्विक आतंक विरोधी युद्ध की आधिकारिक घोषणा को चिह्नित किया। एक ऐसा सिद्धांत जो तब से व्यापक बहस और आलोचना का विषय रहा है।

इस पत्र का प्राथमिक उद्देश्य वैश्विक आतंकवाद की एक व्यापक समीक्षा प्रस्तुत करना है जो आतंकी कृत्यों के सतही विश्लेषण से आगे बढ़कर इसके गहरे मूल कारणों की पड़ताल करता

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.029

है। यह तर्क देता है कि वर्तमान आतंकवाद विरोधी प्रतिमान जिसका नेतृत्व मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका ने किया है मौलिक रूप से विफल रहा है क्योंकि उसने मुख्य रूप से सैन्य समाधानों पर ध्यान केंद्रित किया जबकि उन अंतर्निहित वैचारिक, आर्थिक और राजनीतिक शिकायतों की उपेक्षा की जो उग्रवाद को बढ़ावा देती हैं। यह विफलता, जैसा कि दिखाया जाएगा, ने न केवल मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया जैसे प्रमुख क्षेत्रों में हिंसा को बढ़ाया है बल्कि अनजाने में उन पारिस्थितिक तंत्रों को भी मजबूत किया है जो आतंकवाद को जन्म देते हैं।

एक ठोस अकादमिक आधार स्थापित करने के लिए यह अध्ययन विद्वानों के स्त्रोतों की एक विस्तृत श्रृंखला का सहारा लेता है। स्टीवन ts. चाइल्ड्स की वैश्विक आतंकवाद एक संदर्भ पुस्तिका जैसे प्रमुख कार्य खतरे के विकास का महत्वपूर्ण अवलोकन प्रदान करते हैं, जबकि एलेक्स पीण श्मिड का आतंकवाद अनुसंधान का रूटलेज हैंडबुक दशकों के अध्ययन का निश्चित संश्लेषण और आतंकवाद की आम सहमति वाली परिभाषा प्रस्तुत करता है। इसके अलावा विश्लेषण सोफिया मोस्कालेंकी और क्लार्क मैक्कॉली के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण और गैरी लाफ्री के अपराधशास्त्रीय अंतर्दृष्टि से समृद्ध है जिससे इस जटिल वैश्विक मुद्दे को समझने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण सुनिश्चित होता है।

इस अकादमिक संदर्भ में आधारित यह शोध पहले वैश्विक आतंकवाद के ऐतिहासिक विकास का पता लगाएगा। यह जांचते हुए कि यह किस प्रकार शीत युद्ध के एक उपकरण से एक व्यवस्थित वैश्विक चुनौती में बदल गया। फिर यह अमेरिका के नेतृत्व वाले आतंक के विरुद्ध युद्ध का समीक्षात्मक विश्लेषण करेगा, इसकी सामरिक विफलताओं और क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ाने वाले अनपेक्षित परिणामों को उजागर करेगा। अध्ययन वैचारिक और संरचनात्मक भर्ती प्रक्रियाओं, विशेष रूप से दक्षिण एशिया में अनियमित मदरसों की भूमिका का अन्वेषण करेगा। राजनीतिक विफलता, आर्थिक असमानता और मनोवैज्ञानिक हेरफेर के इन धागों को एक साथ पिरोते हुए पत्र आधुनिक विश्व में आतंकवाद का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए एक समग्र गैर सैन्य केंद्रित रूपरेखा प्रस्तावित करके निष्कर्ष निकालेगा।

स्थानीय हिंसा से वैश्विक खतरे तकः समकालीन आतंकवाद का स्वरूप स्थानीय हिंसा से एक अंतरराष्ट्रीय विचारधारा प्रेरित खतरे की ओर एक प्रतिमान बदलाव द्वारा परिभाषित है। यद्यपि राजनीतिक हिंसा का एक लंबा इतिहास रहा है। 9/11 के हमलों को व्यापक रूप से उस उत्प्रेरक के रूप में मान्यता दी जाती है जिसने आतंकवाद को एक स्थायी वैश्विक स्थिति में बदल दिया। जैसा कि एक विद्वान नोट करता है, इन हमलों ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को यह एहसास करने के लिए मजबूर किया कि स्पष्ट खतरों की जगह जोखिमों और चुनौतियों के विचारों ने ले ली है और अंतर्राष्ट्रीय वातावरण अब असुरक्षा के प्रबंधन पर काम करता है। इस बदलाव ने वैश्विक सुरक्षा का ध्यान अंतरराज्जीय प्रतिद्वंद्विता से हटाकर हिंसा के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की अस्थिर गतिशीलता पर केंद्रित कर दिया, जिससे व्यापक और फैली हुई चिंता का वातावरण बना।

9/11 के बाद वैश्विक जिहाद के उदय और एक बढ़ती हुई सुरक्षा तंत्र के बीच एक प्रकार के संवाद से पोषित यूरो अंटलाटिक भय की संस्कृति ने जड़ पकड़ ली। इस वातावरण के गहरे भू.

राजनीतिक परिणाम हुए हैं। राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश द्वारा घोषित एक व्यापक और खुले अंत वाले आतंक के विरुद्ध युद्ध के रूप में अमेरिकी प्रतिक्रिया ने अफगानिस्तान और इराक पर आक्रमण किया। इस नए परिदृश्य में आतंकवाद की परिभाषा ही एक विवादस्पद मुद्दा बनी हुई है। विद्वान इसे राजनीतिक हिंसा के एक रूप के रूप में वर्गीकृत करते हैं, जो गैर राज्य अभिकर्ताओं द्वारा नागरिक लक्ष्यों पर निर्देशित होती है, जिसमें भय पैदा करना और राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करना होता है। चुनौती यह है कि आतंकवादी का लेबल अक्सर राजनीतिक रूप से प्रभारित होता है। आलोचकों का तर्क है कि अमेरिका अक्सर आतंकवाद को विद्रोह के साथ मिला देता है जिससे विभिन्न समूहों के जटिल उद्देश्यों को अस्पष्ट कर दिया जाता है। यह अस्पष्ट लेबलिंग उस सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत ढांचे को स्थापित करने की कठिनाई को रेखांकित करती है जो एक ऐसे खतरे से निपटने के लिए आवश्यक है जो एक साथ वैश्विक, वैचारिक और गहराई से राजनीतिक हो गया है।

आतंक के विरुद्ध युद्ध की सामरिक विफलताः अमेरिका के नेतृत्व वाला आतंक के विरुद्ध युद्ध अपने आतंकवाद के उन्मूलन के घोषित लक्ष्य के बावजूद अकादमिक और नीति हलकों में व्यापक रूप से एक सामरिक विफलता के रूप में मान्यता प्राप्त है। आतंकी हमलों का अत्यधिक सैन्य बल से जवाब देने की प्रवृत्ति को बार–बार प्रतिकूल दिखाया गया है, जो अक्सर ऐसी स्थितियाँ पैदा करती है जो आतंकवाद को पनपने देती हैं। यह विफलता केवल राय की बात नहीं है, यह प्रेक्षणीय परिणामों में परिलक्षित होती है। 9/11 के दो दशक बाद दुनिया भर में आतंकी हमलों और पीड़ितों की संख्या संघर्ष की शुरुआत की तुलना में काफी अधिक बनी हुई है। जैसा कि एक विश्लेषण कहता है तथाकथित वैश्विक आतंक युद्ध काफी हद तक विफल रहा है। आतंकवाद पूरे मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण एशिया में बना हुआ है।

एक केंद्रीय आलोचना यह है कि अमेरिकी रणनीति मौलिक रूप से गलत निर्देशित रही है। अंतरराष्ट्रीय नीति के सभी क्षेत्रों को आतंक के विरुद्ध एकमात्र लड़ाई के अधीन करके पश्चिम ने अन्य जरूरी वैश्विक मुद्दों को नजरअंदाज किया है और अधिक गंभीर रूप से उन्हीं आबादी को अलग–थलग कर दिया है जिसे वह प्रभावित करना चाहता था। मौलिक त्रुटि वैश्विक जिहादी विचारधारा की गहरी समझ की कमी में निहित है। कई विशेषज्ञों का मानना है कि युद्ध इसलिए विफल रहा क्योंकि उसने जिहादी आंदोलन को एक पूरे के रूप में लक्षित नहीं किया। महत्वपूर्ण रूप से सऊदी अरब और पाकिस्तान की भूमिका को नजरअंदाज किया। वे दो देश जिन्होंने जिहाद को एक राज्य समर्थित पंथ और आंदोलन के रूप में विकसित किया।

इस सामरिक भूल के विनाशकारी परिणाम सबसे स्पष्ट रूप से 2003 में इराक पर आक्रमण के मामले में देखे गए। कब्जे को आतंकी विकास का एक इंजन के रूप में वर्णित किया गया है, जिसने आतंकी प्रचार को मान्यता दी और उग्रवादियों के लिए एक उपजाऊ नई भर्ती भूमि बनाई। यहाँ तक कि अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने भी निष्कर्ष निकाला कि आक्रमण और कब्जे ने इस्लामी उग्रवाद की एक नई पीढ़ी को जन्म देने में मदद की, जिसमें 9/11 के बाद से समग्र आतंकी खतरा बढ़ गया है। इस संदर्भ में क्षेत्र में अमेरिकी कार्य जिसमें सद्दाम हुसैन को उखाड़ फेंकना और लीबिया का अस्थिरीकरण शामिल है, को आतंकवाद विरोधी के रूप में नहीं देखा जाता है बल्कि एक ऐसे

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.029

राज्य के कृत्यों के रूप में देखा जाता है जो साम्राज्यवादी वर्चस्व के लिए होड़ कर रहा है। यह धारणा वेनेजुएला में हाल के सैन्य अभियानों से और मजबूत होती है, जहाँ अमेरिका ने शासन परिवर्तन में संलग्न होकर एक निर्वाचित राष्ट्रपति को हटाकर एक अंतरिम सरकार स्थापित की। एक ऐसा कदम जिसे अंतरराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन के रूप में व्यापक रूप से निंदा की जाती है। इस तरह के हस्तक्षेप इस्लामी दुनिया में यह धारणा पैदा करते हैं कि आतंक के विरुद्ध युद्ध इस्लाम के खिलाफ एक युद्ध है जिससे उन्हीं शिकायतों को बल मिलता है जिनका चरमपंथी समूह अनुयायियों को भर्ती करने के लिए शोषण करते हैं।

एक आतंकवादी का निर्माण अंतःक्षेपण और आर्थिक शोषण का सम्मिलन आतंकवाद से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए उन तंत्रों को समझना महत्वपूर्ण है जो एक सामान्य व्यक्ति को एक हिंसक चरमपंथी में बदल देते हैं। यह उग्रता प्रक्रिया एक एकल घटना नहीं बल्कि एक जटिल मनोवैज्ञानिक और सामाजिक यात्रा है। विद्वानों ने राजनीतिक हिंसा को प्रेरित करने वाले मनोवैज्ञानिक तंत्रों की पहचान की है जो विश्वासों में परिवर्तन से लेकर हिंसक कार्रवाई करने की इच्छा तक विकसित होते हैं। यह उग्रतावाद अक्सर विशिष्ट प्रजनन भूमि में पनपता है। ऐसे वातावरण जो राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संकटों द्वारा परिभाषित होते हैं जहाँ प्रगतिशील ताकतें बहुत कमजोर होती हैं।

अफगानिस्तान और पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्र इन प्रजनन भूमियों में सबसे महत्वपूर्ण हैं। इन क्षेत्रों में सामंती और अर्ध–सामंती जमींदारी व्यवस्था का निरंतर अस्तित्व, जिसे भारत जैसे देश में बहुत पहले समाप्त कर दिया गया था, ने एक धनी अभिजात वर्ग और एक कर्ज में डूबे किसान वर्ग के बीच गहरी खाई पैदा कर दी है। आतंकी संगठन इस आर्थिक भेद्यता का शोषण करते हैं। गरीब परिवारों को उनके बेटों को जिहाद में भाग लेने के बदले में वित्तीय पुरस्कार का वादा करते हैं। जैसा उल्लेख किया गया है। गरीबी और बेरोजगारी से प्रेरित आर्थिक कमजोरी आतंकवाद के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान करती है।

यह आर्थिक प्रेरणा एक गहन रूप से त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली या अधिक सटीक रूप से शिक्षा के शस्त्रीकरण द्वारा प्रबलित है। अल–कायदा जैसे चरमपंथी समूह शैक्षिक रिक्तियों और औपचारिक प्रणालियों की कमजोरियों का सक्रिय रूप से शोषण करते हैं। वे अनियमित मदरसे स्थापित करते हैं, जिन्हें अक्सर आतंकी कारखाने कहा जाता है, जहाँ बच्चों और युवाओं को उदार आलोचनात्मक शिक्षा नहीं दी जाती बल्कि उनमें एक कठोर विचारधारा का समावेश किया जाता है जो शहादत की महिमा करती है। इन अवैध मदरसों में पाठ्यक्रम युवाओं को जिहाद की ओर धकेलता है और इसे आतंकियों की एक स्थिर धारा का उत्पादन करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि युद्ध के मैदान में होने वाले नुकसान आसानी से बदले जा सकें। यह व्यवस्थित अंतःक्षेपण सभी मनुष्यों के लिए प्रेम और सहानुभूति के मानवीय मूल्यों को एक संकीर्ण, संप्रदायवादी, विश्वदृष्टि से बदल देता है जो कथित शत्रुओं के खिलाफ हिंसा को वैध ठहराता है। परिणाम आर्थिक निराशा और वैचारिक कट्टरता का एक शक्तिशाली मिश्रण है। एक ऐसा संयोजन जो एक युवा व्यक्ति को भर्ती के लिए अत्यधिक संवेदनशील बनाता है।

सत्ता के ऐतिहासिक प्रारूप और आधुनिक संघर्ष की जड़ें: वर्तमान वैश्विक अस्थिरता ऐतिहासिक उदाहरणों से रहित नहीं है। आधुनिक राज्य–शिल्प के लिए केंद्रीय शक्ति के दर्शन प्राचीन और पुनर्जागरण के विचारकों तक पता लगाए जा सकते हैं। जिनके विचारों ने अनजाने में या स्पष्ट रूप से उन आक्रामक भू–राजनीतिक रणनीतियों को आकार दिया है जो आज के संघर्ष और आतंकवाद को बढ़ावा देती हैं। इस संदर्भ में भारतीय विचारक कौटिल्य और इतालवी राजनयिक निकोलो मैकियावेली अत्यधिक प्रासंगिक हैं। कौटिल्य ने अपने प्राचीन ग्रंथ अर्थशास्त्र में एक राज्य–शिल्प का प्रतिपादन किया जो विजिगीषु विजय की इच्छा रखने वाले राजा के हितों पर केंद्रित था। उनकी विचारधारा एक शासक को सामरिक और महत्वाकांक्षी होने के लिए प्रोत्साहित करती है जो न केवल बाहरी विरोधियों को हराने के लिए बल्कि आंतरिक सत्ता को सुरक्षित करने के लिए भी छल और षड्यंत्र सहित विभिन्न प्रकार की युक्तियों को नियोजित करता है। सदियों बाद मैकियावेली ने द प्रिंस में प्रसिद्ध रूप से सलाह दी कि एक शासक को लोमड़ी की तरह चालाक और शेर की तरह मजबूत होना चाहिए। यह तर्क देते हुए कि राज्य की सुरक्षा और महिमा के अंत नैतिक रूप से लचीले साधनों की एक विस्तृत श्रृंखला को उचित ठहरा सकते हैं। दोनों विचारकों ने अलग–अलग यथार्थवादी राजनीति के लिए एक दार्शनिक औचित्य प्रदान किया। जहाँ युद्ध और सामरिक विस्तार को राज्य–शिल्प के आवश्यक उपकरण के रूप में देखा जाता है।

यह अबाधित विस्तार और सामरिक षड्यंत्र का दर्शन आधुनिक समानताएँ रखता है। उदाहरण के लिए शीत युद्ध महाशक्तियों के निरंतर वैश्विक प्रभुत्व की खोज की विशेषता थी, जिसने राष्ट्रों को अपने–अपने गुटों में खींचने के लिए प्रॉक्सी युद्धों और हस्तक्षेपों का उपयोग किया,जो कौटिल्य के विजिगीषु के प्रयासों की एक आधुनिक अभिव्यक्ति है। अधिक प्रत्यक्ष रूप से आज शक्तिशाली राष्ट्रों के कार्य जैसे अफगानिस्तान और इराक में अमेरिकी हस्तक्षेप अक्सर वैश्विक दक्षिण द्वारा एक महान आतंकवाद–विरोधी प्रयास के रूप में नहीं बल्कि साम्राज्य के लिए इस ऐतिहासिक खोज की निरंतरता के रूप में व्याख्यायित किए जाते हैं। परिणामस्वरूप पश्चिमी और संबद्ध राज्य शक्तियों की एक कथित धुरी पश्चिम–विरोधी आतंकवाद के लिए एक प्राथमिक प्रेरक बन जाती है, जिससे हिंसा का एक दुष्चक्र बनता है। कौटिल्य की तुलना अक्सर मैकियावेली से उनके छल और षड्यंत्र का उपयोग करने की इच्छा के लिए की जाती है, और समकालीन संघर्ष इस बात पर एक लड़ाई है कि 21वीं सदी में ऐसे सिद्धांतों को कौन लागू करता है।

आतंकवाद निराकरण हेतु एक समग्र रूपरेखा: सैन्य विकल्प से परे ऊपर उल्लिखित आतंकवाद के जटिल और विविध मूल कारणों को देखते हुए आर्थिक निराशा और वैचारिक अंतःक्षेपण से लेकर महान शक्तियों की सामरिक भूलों तक यह स्पष्ट है कि एक विशुद्ध सैन्य या सुरक्षीकृत दृष्टिकोण न केवल अपर्याप्त है बल्कि प्रतिकूल भी है। आतंकवाद का सफल दीर्घकालिक मुकाबला करने के लिए एक समग्र बहुआयामी रणनीति आवश्यक है जो मानव सुरक्षा के सिद्धांतों पर आधारित हो न कि केवल राज्य सुरक्षा पर।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रणनीति को चरमपंथ का प्रभावी ढंग से मुकाबला करना चाहिए। यह धारणा कि आतंक के विरुद्ध युद्ध इस्लाम के खिलाफ एक युद्ध है वैश्विक जिहाद का

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.029

एक मूलभूत चालक है। इसलिए यह अनिवार्य है कि राजनीतिक इस्लाम की विचारधारा को आतंकवाद की विचारधारा से सक्रिय रूप से अलग किया जाए। इसके लिए उदारवादी मुस्लिम नेताओं, सरकारों और अंतरराष्ट्रीय निकायों द्वारा एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है कि वे सार्वजनिक और लगातार आईएसआईएस और अलकायदा जैसे समूहों के धार्मिक दावों को अवैध ठहराएँ। इसका मुकाबला गोलियों का नहीं बल्कि विचारों का युद्ध है।

दूसरा, शिक्षा को शांति और विकास के एक उपकरण के रूप में पुनः प्राप्त किया जाना चाहिए न कि उग्रवाद के साधन के रूप में। संयुक्त राष्ट्र और यूनेस्को जैसे अंतरराष्ट्रीय निकायों को अफगानिस्तान और पाकिस्तान जैसे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में शैक्षिक सुधारों को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसमें सरकारों को उदार स्कूली प्रणाली स्थापित करने में समर्थन देना शामिल है जो अनियमित मदरसों के लिए एक विकल्प प्रदान करती है। जो वर्तमान में आतंकी कारखानों के रूप में कार्य करते हैं। आलोचनात्मक सोच, संघर्ष समाधान और विश्व धर्मों एवं संस्कृतियों की व्यापक समझ पर ध्यान केंद्रित करना चरमपंथी प्रचार के खिलाफ लचीलापन बनाने के लिए आवश्यक है।

तीसरा, दीर्घकालिक स्थिरता उन संरचनात्मक आर्थिक शिकायतों को संबोधित करने पर निर्भर करती है जो समुदायों को आतंकी भर्ती के प्रति संवेदनशील बनाती हैं। इसका मतलब है सतत विकास, रोजगार सृजन और आतंकवाद प्रभावित क्षेत्रों में गरीब परिवारों के लिए ऋण राहत में निवेश करना। सूक्ष्म वित्त संस्थानों के आशाजनक कार्य का विस्तार करके और बड़े पैमाने पर आजीविका कार्यक्रमों को लागू करके हम उस आर्थिक गणना का सीधे मुकाबला कर सकते हैं जो एक हताश युवा को हिंसा का जीवन चुनने के लिए प्रेरित करती है। जैसा कि उग्रतावाद का सिद्धांत बताता है। यद्यपि गरीबी प्रत्यक्ष कारण नहीं हो सकती है यह एक अत्यधिक प्रभावी सुविधाजनक स्थिति है।

अंत में, अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सैन्यविहीन और अराजनीतिकृत किया जाना चाहिए। आतंकवाद–विरोधी प्रयास अंतरराष्ट्रीय कानून के प्रति वास्तविक सम्मान द्वारा निर्देशित होने चाहिए। कौटिल्य या मैकियावेली की आक्रामक हस्तक्षेपवादी राज्य–शिल्प को अस्वीकार करते हुए विश्व को उस बदलाव को अपनाने की आवश्यकता है जिसे एक विद्वान ने मैकियावेलियनवाद से कूटनीति के उपयोग की ओर कहा है। खुफिया साझाकरण और मूल कारणों के समाधान पर केंद्रित एक वैश्विक आतंकवाद विरोधी कार्य बल स्थापित करके और इसका नेतृत्व केवल सत्तावादी शक्तियों द्वारा नहीं बल्कि आतंकवाद से प्रभावित देशों द्वारा किया जाना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय विश्वास और वैधता बना सकता है। शायद सबसे महत्वपूर्ण बात अहिंसा के प्रति एक सैद्धांतिक प्रतिबद्धता आतंकवाद के तर्क के लिए अंतिम मारक प्रदान करती है। गांधीवादी विचारधारा का अनुप्रयोग प्रतिशोध की हिंसा के अंतहीन और आत्म–पराजित चक्र को कम करने के लिए नैतिक साहस और सैद्धांतिक असहयोग का उपयोग करना उस आधुनिक युग के लिए एक शक्तिशाली विकल्प प्रदान करता है। जैसा कि एक अग्रणी विचारक ने एक बार कहा था एक व्यक्ति बुरा पैदा नहीं होता है यह समाज द्वारा निर्मित परिस्थितियाँ उसे बुरा बनाती हैं। इस प्रकार अंतिम समाधान एक ऐसा समाज बनाना है जो शोषण से मुक्त हो और अवसरों से भरा हो।

निष्कर्ष

आतंकवाद 21वीं सदी की सबसे गंभीर वैश्विक चुनौतियों में से एक बना हुआ है। एक जटिल घटना जो सामरिक हिंसा से एक अंतरराष्ट्रीय वैचारिक खतरे के रूप में विकसित हुई है। इस शोध पत्र ने तर्क दिया है कि वर्तमान आतंकवाद–विरोधी ढांचा जो अमेरिका के नेतृत्व वाले आतंक के विरुद्ध युद्ध का प्रभुत्व रहा है बड़े पैमाने पर विफल रहा है क्योंकि उसने सैन्य बल को चरमपंथ की राजनीतिक, आर्थिक मनोवैज्ञानिक और वैचारिक जड़ कारणों की गहरी समझ पर प्राथमिकता दी। इराक और अफगानिस्तान पर आक्रमणों ने चरमपंथ को दबाने के बजाय जिहादी नेटवर्क के लिए शक्तिशाली भर्ती उपकरण के रूप में कार्य किया। पूरे क्षेत्रों को अस्थिर किया और पश्चिमी साम्राज्यवाद को बल दिया।

दक्षिण एशिया के सामंती मदरसों में अंतःक्षेपण प्रक्रियाओं और दरिद्र परिवारों के आर्थिक शोषण की जांच करके इस पत्र ने उन प्रणालियों पर प्रकाश डाला है जो आतंकवादियों का निर्माण करती हैं। इसके अलावा कौटिल्य और मैकियावेली के विश्लेषण ने राज्य–केंद्रित शक्ति राजनीति की गहरी ऐतिहासिक जड़ों का खुलासा किया जो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और कूटनीति की अनिवार्यता पर हावी बनी हुई है। इस प्रकाश में कार्रवाई का आह्वान स्पष्ट है। एक सुरक्षित दुनिया का मार्ग अधिक ड्रोन या सैन्य न्यायाधिकरणों में नहीं बल्कि वैश्विक सुरक्षा नीति में एक मौलिक बदलाव में निहित है। एक स्थायी समाधान के लिए एक समग्र और मानवीय रणनीति की आवश्यकता है जिसमें आतंकी विचारधारा को अवैध ठहराना, दुनिया के सबसे कमजोर युवाओं को उदार शिक्षा प्रदान करना और एक वैश्विक आर्थिक प्रणाली का निर्माण करना शामिल है, जो निराशा पर गरिमा और अवसर प्रदान करती है। केवल उन वातावरणों को ध्वस्त करके जो घृणा को जन्म देते हैं, मानवता, आतंकवाद के अभिशाप को हमेशा के लिए हराने की आशा कर सकती है।

संदर्भ

1. चाइल्ड्स, स्टीवन जे. वैश्विक आतंकवादः एक संदर्भ पुस्तिका। ब्लूम्सबरी अकादमिक, 2023।
2. श्मिड, एलेक्स पी., संपा– आतंकवाद अनुसंधान का रूटलेज हैंडबुक। रूटलेज।
3. चेनोवेथ, एरिका, रिचर्ड इंग्लिश, एंड्रियास गोफस और स्टैथिस एन कालीवास, संपा. आतंकवाद का ऑक्सफोर्ड हैंडबुक। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. मार्टिन, गस आतंकवाद की अनिवार्यताएँः अवधारणाएँ और विवाद। सेज प्रकाशन।
5. कोमेन, विलेम और जूप वैन डेर प्लिग्ट। उग्रतावाद और आतंकवाद का मनोविज्ञान। रूटलेज, 2015।
6. लाफ्री, गैरी। आतंकवाद के अपराधशास्त्र की ओर। आतंकवाद के अपराधशास्त्र के हैंडबुक में।
7. गुणरत्न रोहन। अल कायदा के अंदर आतंक का वैश्विक नेटवर्क। कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. बार्गेस–पेड्रेनी पोल। 11/9 से 9/11 तक, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में निरंतरता या परिवर्तन 2024।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.029

9. बर्गन पीटर। सबसे लंबा युद्ध, अमेरिका और अल–कायदा के बीच स्थायी संघर्ष। फ्री प्रेस 2011।
10. बोके सर्गेई। कैसे आतंक के विरुद्ध युद्ध ने मध्य पूर्व को अस्थिर किया। न्यू एज 2026।
11. कॉर्डसमैन एंथोनी एच, आतंक के विरुद्ध युद्ध की विफलता। सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज।
12. मोस्कालेंको सोफिया और क्लार्क मैक्कॉली। आतंकवाद के लिए उग्रतावाद के बारह तंत्र। आतंकवाद के मनोविज्ञान का डी ग्रुइटर हैंडबुक, 2026।
13. कांगले आर–पी– कौटिलीय अर्थशास्त्र। मोतीलाल बनारसीदास।
14. मैकियावेली निकोलो। द प्रिंस। 1532।
15. गांधी महात्मा। गांधी का अहिंसा का सिद्धांत,आतंकवादियों के लिए उनका उत्तर, 2019।